



XIV अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

इंडियन सोसाइटी फॉर थिएटर रिसर्च (ISTR)

(द इंडियन चैप्टर ऑफ़ इन्टरनेशनल फ़ेडरेशन फॉर थिएटर रिसर्च)

प्रदर्शनकारी कला विभाग (फ़िल्म एवं रंगमंच),

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा आयोजित

15-17 जनवरी 2018

शोध पत्र आमंत्रण

[रंगमंच, संगीत, नृत्य मीडिया व अन्य संबन्धित अनुशासनों से जुड़े

विद्वानों, शोधकर्ताओं और कलाकारोंका स्वागत है]

प्रदर्शन हेतु प्रतिरोध या प्रतिरोध का प्रदर्शन : विश्व परिदृश्य

रंगमंच ने हमेशा जन अभिव्यक्तियों के लिए एक मज़बूत ज़मीन का काम किया है और ये तथ्य उतना ही स्वयं सिद्ध है जितनी कि समस्त विश्व भाषाएँ | जन और रंगमंच के इस जटिल संबंध की प्रक्रिया में रचनवाद ने स्थिर और निरपवाद रूप से अग्रणी भूमिका निभाते हुए एक ऐसा स्पेस तैयार किया है जहां पर विरोध, प्रतिरोध, विद्रोह, प्रतिवाद असहमति, पीड़ा, दमन, शोषण और अत्याचार जैसी तमाम विसंगतियां अभिव्यक्ति पाती हैं | सत्ता द्वारा जन अभिव्यक्तियों को कुचलने की प्रक्रिया ने हमेशा रंगमंच को समृद्ध व सुदृढ़ करते हुए ऐसी साज़िशों को पूरी ताकत और ऊर्जा के साथ संप्रेषित किया है | नव-उदारवाद के प्रभाव में सारे प्रतिमानों का संस्थानीकरण/नियन्त्रण कर रही समकालीन विश्व की राजनीति लगातार अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता और अधिकार को कुचलने का काम कर रही है | प्रतिवाद व प्रतिरोध पर रोक लगाने के साथ-साथ दुनिया के सभी सत्ता केंद्र उन जगहों और मंचों का अस्तित्व भी समाप्त कर देने का

कुचक्र चला रहे हैं जहां असहमति व विरोध का रंगमंच सक्रिय है | विरोध के दमन और ऐसे स्थलों के सिमटते जाने की प्रक्रिया ने विश्व रंगमंच के पटल पर बहुत सी नवीन रंगमंचीय प्रक्रियाओं की संरचना की है जो जन प्रतिरोध को सतत सक्रिय रखने की दिशा में अत्यंत सहायक व उपयोगी हैं |

हाल ही में तमिलनाडु के किसानों द्वारा भारत की राजधानी दिल्ली के जनपथ में जो प्रदर्शन हुआ उसे रंगमंच और प्रतिरोध के नए तरीके के रूप में देखा जा सकता है | दमन और उसके विरुद्ध नए रचनात्मक प्रयोगों के इस परिदृश्य में रंगमंच और विरोध की संस्कृति का अद्ध्ययन और विचार विमर्श पहले से कहीं ज़्यादा सामयिक व महत्वपूर्ण हो गया है |

आई एस टी आर का आगामी सम्मेलन उपरोक्त तर्कों के आधार पर रंगमंच और प्रतिरोध जैसे वृहद व समसामयिक विषय पर केन्द्रित है | प्रस्तावित सम्मेलन में प्रतिरोध की भावना व विचार से प्रेरित रंगमंच प्रदर्शनों के तुलनात्मक अद्ध्ययन, आकलन, विश्लेषण व डाक्यूमेंटेशन पर विचार-विमर्श किया जाएगा |

सम्मेलन के लिए संक्षिप्त सार आमंत्रित है जो निम्न शीर्षकों को ध्यान में रखकर भेजे जा सकते हैं परंतु सिर्फ इन्हीं उप-विषयों तक सीमित नहीं हैं |

1. प्रतिरोध का रंगमंच
2. रंगमंच और प्रतिरोध के लिए सीमित होते स्पेस
3. सांस्कृति की राजनीति व प्रतिवाद का रंगमंच
4. प्रतिरोध के रंगमंच में हिंसा व अहिंसा
5. विरोध प्रदर्शन और नवाचार
6. राजनैतिक विचारधाराएँ
7. संस्कृतियों का टकराव
8. भाषागत प्रतिमान और प्रतिरोध का रंगमंच
9. अशब्द / सांकेतिक / गैर मौखिक प्रदर्शन व प्रतिरोध
10. संगठित / संरचित विरोध प्रदर्शन
11. स्थल/क्षेत्र केन्द्रित रंगमंच और प्रतिरोध
12. वर्चुअल स्पेसेस (परोक्ष/आभासीय स्थल) व प्रतिवाद प्रदर्शन
13. सोशल / डिजिटल मीडिया और प्रतिरोध का रंगमंच
14. रंगमंच और उग्र/अतिवादी (तार्किक) विरोध
15. जन आंदोलन और रंगमंच
16. प्रतिरोध प्रदर्शन का इतिहास लेखन
17. प्रतिरोध रंगमंच के औपनिवेशिक व उतर औपनिवेशिक प्रतिमान
18. देशज व लोक प्रदर्शन परंपरा तथा प्रतिरोध

मुख्य सम्मेलन हेतु शोध पत्रों बीस (20) मिनट से अधिक की अवधि का नहीं होना चाहिए। शोध छात्रों के फोरम में, उनके अनुसंधान विषयों पर अधिकतम दस मिनट की प्रस्तुतियां हो सकती हैं।
एबस्ट्रैक्ट प्रस्तुत करने के लिए दिशानिर्देश: (कृपया ध्यान से पढ़ें) |

एबस्ट्रैक्ट MSवर्ड में निम्न जानकारी के साथ 500 शब्दों तक सीमित होना चाहिए (पीडीएफ फाइलों को स्वीकार नहीं किया जाएगा) |

अ. एबस्ट्रैक्ट का शीर्षक
प्रस्तुतकर्ता लेखक, दूसरा लेखक, अन्य लेखक *
(शोध छात्रों के फोरम में प्रस्तुत शोध पत्रों में पर्यवेक्षक का नाम शामिल नहीं होना चाहिए)

ब. एबस्ट्रैक्ट निर्देश : (ध्यान से पढ़ें)

एबस्ट्रैक्ट के पहले 2-3 वाक्य में पूर्व कार्य और अध्ययन की आवश्यकता को रेखांकित करना चाहिए। एक या दो वाक्य अध्ययन के उद्देश्यों को रेखांकित करना चाहिए। अगले 4-5 वाक्यों को विभिन्न शोध प्रोटोकॉल का इस्तेमाल करने वाले तरीकों से संबंधित होना चाहिए जिसके बाद एक संक्षिप्त रूप में महत्वपूर्ण शोध निष्कर्ष प्रदर्शित किया गया। संक्षिप्त चर्चा के लिए एक या दो वाक्यों को समाहित करना उचित होगा। अंतिम भाग अनुसंधान को समाप्त करने का एक प्रयास होना चाहिए। एबस्ट्रैक्ट 500 शब्दों से अधिक नहीं होनी चाहिए।

की वर्ड्स: शोधपत्र के लिए 4-5 प्रमुख शब्द प्रदान करें

अपेक्षित मंचों का उल्लेख करें [यानी, जनरल कॉन्फ्रेंस, या रिसर्च स्कॉलर्स फोरम]; तकनीकी सुविधाओं का संकेत; लेखक का संक्षिप्त जीवनचर्यात्मक नोट (150 से अधिक शब्द नहीं होने चाहिए) और लेखक का ई-मेल-पता।

सभी प्रस्ताव केवल istr.str@gmail.com पर भेजे जाने चाहिए।

नोट: एबस्ट्रैक्ट केवल समीक्षा के बाद स्वीकार किया जाएगा। अतः दिशानिर्देशों का पालन किया जाना आवश्यक है।

सम्मेलन की समय सीमा:

अ. एबस्ट्रैक्ट प्रस्तुति: 31 अक्टूबर 2017 (एबस्ट्रैक्ट इस तारीख के बाद स्वीकार नहीं किये जाएंगे)
ब. स्वीकृति की सूचना: 15 नवंबर 2017
स. प्रारंभिक पंजीकरण: 15 दिसम्बर 2017

सम्मेलन शुल्क:

प्रारंभिक पंजीकरण:

अ. राष्ट्रीय प्रतिभागियों के लिए 3000/- रुपये
ब. शोध छात्र (राष्ट्रीय) 1000/- रुपये

विलंबित पंजीकरण (15 दिसंबर 2017 के बाद)

अ.	राष्ट्रीय प्रतिभागियों के लिए	4000/- रुपये
ब.	शोध छात्र (राष्ट्रीय)	1500/- रुपये

अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागियों के लिए (सम्मलेन स्थल पर) 150 USD

नोट: *पं जीकरण शुल्क भुगतान विधि स्वीकृति पत्र के साथ सूचित की जाएगी।

*अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागी सम्मलेन स्थल पर भारतीय मुद्रा में भुगतान कर सकते हैं।

नोट -1: सम्मेलन शुल्क में सम्मेलन किट, सम्मेलन के सभी शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में निशुल्क प्रवेश, सुबह का नाश्ता, दोपहर का भोजन और रात्रिभोज, सत्रों के मध्य कॉफी और स्नैक्स, केवल 4 रातों (आगमन 14 जनवरी और प्रस्थान 18 जनवरी), के लिए साझा आधार पर आवास, सम्मेलन और अन्य विशेष कार्यक्रमों के दौरान प्रवेश, आदि शामिल है।

स्थान: सम्मेलन वर्धा में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के परफॉर्मिंग आर्ट्स (थियेटर एंड फिल्म) विभाग द्वारा अपने सुरम्य परिसर में आयोजित किया जाएगा। विस्तृत सूचना विश्वविद्यालय की वेबसाइट <http://www.hindivishwa.org/> पर उपलब्ध है।

वर्धा शहर का संक्षिप्त परिचय:

1930 में जब गांधी जी ने साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) से नमक सत्याग्रह के लिए दांडी में पदयात्रा शुरू की, तब उन्होंने भारत के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति तक साबरमती नहीं लौटने का फैसला किया था। दो साल के कारावास से रिहा होने पर वह 1934 में जमनालाल बजाज के निमंत्रण पर वर्धा आ गए थे। अप्रैल 1936 में, गांधी जी ने वर्धा के निकट शेगांव में अपना निवास स्थापित किया जिस का उन्होंने नाम बदलकर सेवाग्राम रख दिया। तब से सेवाग्राम एक प्रेरणादायक स्थान बन गया है। सेवाग्राम में महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मामलों और आंदोलनों पर कई निर्णय लिया गए थे। इस देश की अंतर्निहित ताकत के अनुरूप राष्ट्र निर्माण गतिविधियों के लिए गांधीजी द्वारा स्थापित कई संस्थाओं के लिए वर्धा केंद्रीय स्थान बन गया।

वर्धा के लिए आवागमन के साधन :

वर्धा देश के बाकी हिस्सों के साथ रेल और सड़क मार्ग से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। नागपुर स्थित बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय एअरपोर्ट, वर्धा शहर से 75 किलोमीटर दूर स्थित निकटतम एअरपोर्ट है जो देश के सभी प्रमुख शहरों से, एवं शारजाह और बेंकॉक से सीधी उड़ानों के साथ जुड़ा हुआ है। विशेष अनुरोध पर हवाई अड्डे से आने जाने के लिए निर्धारित भुगतान पर टैक्सियां उपलब्ध कराई जा सकती हैं। पूर्व सूचना पर सेवाग्राम और वर्धा जंक्शन रेलवे स्टेशनों से पिकअप और ड्रॉप के लिए निशुल्क वाहन भी उपलब्ध किया जा सकता है। पश्चिम या पूर्व से यात्रा करने वाले लोग, वर्धा जंक्शन पर उतर सकते हैं और उत्तर या दक्षिण से आने वाले लोग सेवाग्राम पर उतर सकते हैं। दोनों स्टेशन वर्धा शहर के भाग हैं।

वित्तीय सहायता:

वित्तीय उपलब्धता के अभाव के कारण, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागियों के लिए यात्रा व्यय हेतु ISTR किसी प्रकार की वित्तीय सहायता प्रदान करने की स्थिति में नहीं है।

सम्मेलन समन्वयक:

डॉ. सतीश पावडे

सहायक प्रोफेसर, प्रदर्शनकारी कला विभाग (फ़िल्म एवं रंगमंच)
महात्मा गांधी हिंदी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

ई-मेल: satishpawade1963@gmail.com

satish_pawade@yahoo.co.in

फोन: 09372150158/9422535158

**XIV International Conference of
Indian Society for Theater Research
(The Indian Chapter of International Federation for Theater Research)**

**Organized by Department of Performing Arts (Film and Theatre)
Mahatma Gandhi International Hindi University
Wardha, Maharashtra
15-17 January 2018**

Call for Papers

[Open for scholars, researchers and practitioners of
Theatre, dance, music, media and other related disciplines]

**Protest to Perform or Perform to Protest:
Performances of the World**

The fact that theatre has always been the lifeline of mass' expression of all kinds, is as old a truism as are the languages of the world. In this intricate relationship of masses and theatre, constructivism has come to the fore invariably to engender spaces for the theatrical expression complexities of protest, resistance, revolt, dissent, pain, suppression, exploitation and others. Suppression of people's expressions leads to enrichment of theatre as a medium to convey the complexities. Contemporary world politics, which is being guided by the neoliberal institutionalisation of all paradigms, is increasingly perpetuating suppression of rights to express. Along with the restrictions on the expression of protest and resistance, the regimes across the world are coming down heavily to annihilate protest spaces. This suppression of protest and the shrinking protest spaces have resulted in various interesting experiments in theatre world over and thus theatre, in this scenario, has become significantly instrumental in mobilizing resistance and tendering protests. Recent protest of Tamil Nadu farmers at Jantar Mantar in the national capital city of Delhi, which gathered attention for its visual impact and theatricality, is an example of the innovative synthesis of theatre and protest. In the light of this suppression and innovation, study of theatre and protest has become necessary like never before. The forthcoming international conference of ISTR is set to deliberate on theatre and protest in the light of above-mentioned rationale. The conference will look forward to deliberating on the assessment, analysis, documentation and comparisons of the theatre performances that have been inspired by spirit of protest. Abstracts are invited on the issues that may (but not limited to) deal with following subtopics:

- a) Protest theatre
- b) Shrinking spaces of theatre and protest
- c) Cultural politics and protest theatre
- d) Performing resistance
- e) Violence and non-violence in protest performance
- f) Innovations and protest performance
- g) Political ideologies
- h) Clash of cultures
- i) Linguistic paradigms and protest theatre
- j) Non-verbal performances and protest
- k) Structured performances in protest
- l) Site-specific theatre and protest
- m) Virtual spaces in protest performances
- n) Social / digital media and protest theatre
- o) Radical protest and theatre
- p) Mass movements and theatre
- q) Historiography of resistance and performance
- r) Colonial and postcolonial paradigms of resistance theatre
- s) Folk and indigenous performance traditions and protest

We welcome proposals for general conference and for the Research Scholars' Forum dealing with the subject. General Conference papers must be no longer than twenty (20) minutes. In Research Scholars' Forum, research scholars may have presentations of ten minutes on their research topics which may not be necessarily on the Conference theme.

Guidelines for Abstract Submission: (Please read carefully)

Abstract should be of 500 words in **MS Word only (PDF files will not be accepted)** with following information:

- a. Title of the Abstract
Presenting Author, Second Author, Corresponding Author*
(name of the supervisor should not be included, especially in research scholars' forum)
- b. Abstract:
First 2-3 sentences of the abstract should highlight the prior work and need of the study. One or two sentences should highlight the objectives of the studies. Next 4-5 sentences should be related to the methods employed various research protocols followed by display of key research findings in a succinct form. One or two sentences for a brief discussion will be appreciated.

The final part should be an attempt to conclude the research. The abstract should not exceed 500 words in total.

Key words: Provide 4-5 key words for the research.

Mention intended forums [i.e., General Conference, or Research Scholars Forum]; indication of technical facilities; brief biographical note of the author (not more than 150 words) and e-mail-address. All proposals should be sent at **istr.str@gmail.com** only.

Note: The abstract will ONLY be accepted after peer-review. Strict adherence to the submission guidelines is to be observed.

Conference Deadlines:

- | | | |
|----|--------------------------|--|
| a. | Submission of abstracts: | 31st October 2017 (abstracts will not be accepted after this date) |
| b. | Acceptance Information: | 15 November 2017 |
| c. | Early Registration: | 15 December 2017 |

ISTR Conference Fee:

- | | | |
|----|--|--|
| a. | Early registration | |
| | i. | National participants: INR 3000 |
| | ii. | Research Students (National): INR 1000 |
| b. | Late Registration (after 15 December 2017) | |
| | i. | National participants: INR 4000 |
| | ii. | Research Students (National): INR 1500 |
| c. | International Participants (on the spot) | USD 150 |

Payment method will be informed along with the acceptance letter.

International participants can make their payment in Indian currency upon arrival also. There is no late registration for them.

Note-1: Conference Fee includes conference kit, access to all conference events, cultural events and theatre shows, boarding in moderate accommodation on sharing basis for 4 nights including breakfast, lunch and dinner (Arrival 14 January and departure 18 January – 4 nights only), coffee and snacks during conference and other courtesy special events.

Venue: The conference will be organized by the Department of Performing Arts (Theatre and Film) of Mahatma Gandhi International Hindi University at Wardha in its picturesque campus situated in a cluster of five hills. You can visit the university website <http://www.hindivishwa.org/>

About Wardha City:

When Gandhi ji started his padayatra (foot march) in 1930 from Sabarmati Ashram (Ahmadabad) to Dandi for the Salt Satyagraha, he had decided not to return to Sabarmati till independence for India was attained. On his release from two years imprisonment he came to Wardha in 1934, at the invitation of Jammalal Bajaj. In April 1936, Gandhiji established his residence in the village Shegaon which he renamed as Sevagram, which means 'village of service'. Gandhiji was 67 years old when he came to Sevagram. From then on, Sevagram has become an inspiring place, practically, the political capitol of the country during the freedom struggle. Many decisions on important national matters and movements were taken at Sevagram. It became the central place for a number of institutions for the nation building activities devised by Gandhiji to suit the inherent strength of this country.

Travelling to Wardha:

Wardha is well connected by rail and road with rest of the country. The nearest airport Baba Saheb Bhimrao Ambedkar International Airport Nagpur is 75 kilometers from Wardha town with direct flights from all the major cities of the country as well as from Sharjah and Bangkok. The taxis may be provided for airport pick up and drop on request at a nominal payment. However, courtesy pick up and drop may be provided from Sevagram and Wardha Junction Railway Stations on request and prior information. Those travelling from west or east, may alight at Wardha Junction and people coming from north or south may alight at Sevagram. Both the stations are part of Wardha city.

Financial Logistics:

Due to lack of financial support, ISTR is not in position to provide any kind of financial support towards the travel cost to national and international participants.

Conference Coordinator:

Dr. Satish Pawade
Assistant Professor
Department of Performing Arts (Theatre and Film)
Mahatma Gandhi Hindi International University
Wardha (Maharashtra)
Email: satishpawade1963@gmail.com
satish_pawade@yahoo.co.in
Phone: 093721 50158/ 9422535158

You may also contact:

Dr. Vibha Sharma
Gen. Secretary (ISTR)
Associate Professor, Aligarh Muslim University
Email: vibz_s@yahoo.co.in
Phone: 09634105131